RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

प्रथम विश्वयुद्ध का कृषि पर प्रभाव

डॉ0 आलोक कुमार

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

भारत में ब्रिटिश सत्ता के स्थापना के बाद देश की कृषि में ह्रास आया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अधिक से अधिक कर प्राप्त करने की चेष्टा की और इसके लिए विषयक भिन्न प्रयोग किये गये। उसने 'खुली नीलामी पद्धति' अपनायी। इस पद्धति के अनुसार उन्हीं लोगों को जमीन दी जाने लगी जो अधिकाधिक लगान देने का वचन देते थे। किन्तु यह पद्धति सफल नहीं हो सकी। लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 में स्थायी बन्दोबस्त की पद्धति अपनाई जिसे बिहार, बंगाल और उड़ीसा में लागू किया गया। इसके बाद बम्बई तथा मद्रास में रैयतवाड़ी प्रथा लागू किया गया और यू.पी. में महालवाड़ी पद्धति।

उपरोक्त पद्धतियों ने भारत में जमींदार वर्ग पैदा किया तथा जमींदारों ने भारतीय कृषकों का शोषण करना प्रारंभ किया। कृषकों का शोषण करके उन्होंने कम्पनी का अधिकोष भरना प्रारंभ किया। जमींदारों तथा सरकार के साथ अन्य करिन्दे भी ओ गये और वे कृषकों का शोषण करने लगे। रैयतवाड़ी पद्धति ने साहूकारों का वर्ग पैदा किया जो कृषकों को सूद पर रूपये देने लगे। इन पद्धतियों के कारण कृषकों को भूमि पर अधिकाधिक कर देने पड़े। इसके विपरीत खेती की उपज बढ़ाने की व्यवस्था नहीं की गई। प्राचीन पद्धति पर ही कृषक खेती करते रहे और सिंचाई व्यवस्था लगभग अभाव ही रहा। अतः ग्रामीणों को अकाल तथा निर्धनता का शिकार होना पड़ा।

अंग्रेजी सरकार द्वारा कृषि के क्षेत्र में जो बार–बार प्रयोग होते रहे वे केवल उनके व्यक्तिगत हित के लिए किये जाते थे। दीर्घकाल तक सरकार की ओर से कृषि को सुधारने की दिशा में कोई प्रयत्न नहीं किया गया। सुमित सरकार के मतानुसार अंग्रेजों की बनायी नहर प्रायः कच्चे कुओं की तुलना में स्थानीय परिस्थितियों के काम के अनुकूल होती थी और कभी–कभी तो उनमें दलदल या खारेपन की समस्या पैदा हो जाती थी। इसके अतिरिक्त नहरों से केवल धनी किसान ही लाभ उठाते थे क्योंकि सिंचाई शुल्क बहुत अधिक था। साथ ही सिंचाई से गन्ना, कपास, गेंहूँ जैसे फसलों को प्रोत्साहन मिलने के कारण गरीब आदमी का भोजन अर्थात् ज्वार–बाजरे, दालों आदि का उत्पादन घट गया।

भारत में अंग्रेजों के आने के पूर्व यह देश यूरोप की तुलना में उन्नत और समृद्ध था, लेकिन 190 वर्षों के अन्दर देश का जिस तरह से शोषण किया उससे यहाँ की कृषि व्यवस्था की रीढ़ टूट गयी और देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़ गया। ए.आर. देशाई ने लिखा है कि ''अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीय कृषि के राष्ट्रीय रूप और महत्त्व का जन्म तो हुआ लेकिन यह बहुत सम्पन्न और समृद्ध नहीं हो सकी। कुल मिलाकर किसानों की भौतिक स्थिति में भी बहुत तरक्की नहीं हुई। संगठन और उत्पादन की दृष्टि से भी कृषि के हालत में सुधार नहीं हुआ। अंग्रेजों के शासनकाल में भी, अपने नवीन राष्ट्रीय रूप के बावजूद, भारतीय कृषि का इतिहास अविरत और वर्धनशील असंगठन का इतिहास रहा है। किसानों की दरिद्रता और ऋणग्रस्तता बढ़ती गयी उनके भू–स्वामित्व का अपहरण होता रहा, और अनेक खेतिहर सर्वहारा वर्ग की हैसियत में आ गये।''

भूमि का उपविभाजन तथा विखंडन भारतीय कृषि का विनाशकारी तथ्य है। हर किसान की जमीन कम होती चली गयी और जोतवाली जमीन अधिकाधिक अनार्थिक होती गयी। परिवार के सदस्य पहले गाँव द्वारा पूरे परिवार को दी गई जमीन के संयुक्त मालिक होते थे और उस पर एक साथ काम करते थे अब जमीन के निजी स्वामित्व की स्थापना और इसके हस्तांतरण के आधार के साथ ही संयुक्त परिवार में अपकेन्द्रित प्रवृत्तियों का जन्म हुआ। इसके चलते भू–संपदा का विभिन्न दावेदारों के बीच वितरण होने लगा और जमीन का अधिकाधिक उपविभाजन होने लगा।

प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व में ही भारतीय किसानों की रीढ़ टूट चुकी थी। अंग्रेजी सरकार ने बिल्कुल नई व्यवस्था स्थापित की। नई व्यवस्था में फसल अच्छा हो या बुरा किसान को हर साल एक निश्चित धन राशि के सरकार को लगान देना पड़ता था। भारत में सिंचाई की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी। किसान को अपनी फसल के लिए बाहर के बाजार में बहुत कम कीमत मिलती थी। फलतः सरकार की सालाना माँग की पूर्ति करना किसान के लिए असंभव हो गया। 1857–58 में जब ब्रिटिश राज्य ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत का शासन सूत्र अपने हाथ में लिया, उक्त वक्त सारे भारत का भूमिकर 15.3 मिलियन पौण्ड थ। बाद में यह राशि बढ़ती गयी। 1900–01 में यह राशि 17.5 मिलियन पौंड थी, 1911–12 में 20 मिलियन पौण्ड और 1936–37 में 23.9 मिलियन।''

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के परजीवी लक्षण जन सामान्य के सामने अधिक खुलकर प्रकट हुये। युद्ध के साथ ही रूस की अक्टूबर क्रांति से प्रेरित विश्वव्यापी क्रांतिकारी लहर ने साम्राज्यवाद के ढाँचे पर भारी आघात पहुँचाया। किसान मजदूर सहित भारत की मेहनतकश जनता पर इसका निश्चित असर पड़ा और इसने भारत के जन आन्दोलन के संदर्भ में प्रेरक भूमिका निभाई।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद आर्थिक मंदी का दौर चला और सरकार ने पौण्ड और रूपये की विनिमय दर को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये निश्चित किया जिससे साधारण जनता के लिये परिस्थितियाँ ओ बिगड़ गयी। विशेषकर कृषकों के लिये मिल मजदूरों के लिये तथा शिक्षित जनता के लिये। पंडित नेहरू ने इस समय की अन्धकारमय अवस्था का वर्णन इन शब्दों में किया है ''हम एक सर्वशक्तिमान दैत्य के चंगुल में फँस गये हैं, हमारे अंग गतिहीन हो गये हैं और मन मरणशील। कृषक वर्ग पूर्ण रूप से दीन और अत्यंत भयभीत हो गया है। मिल में काम करने वाले लोग इससे अधिक अच्छी स्थिति में नहीं है। मध्यम वर्ग और बुद्धिजीवी जो इस उमड़ते हुये अंधकार में आकाशद्वीप के रूप में कार्य कर रहे थे, स्वयं ही इस सर्वव्यापी अंधकार में डुब गये हैं।

इस प्रकार कृषि व्यवस्था के सभी पहलुओं पर भारत में ब्रिटिश शासन के प्रभाव को महसूस किया गया। यद्यपि विभिन्न चरणों में इस प्रभाव का रूप भिन्न–भिन्न रूप रहा किन्तु बुनियादी रूझान एक–सा बना रहा। विश्व युद्धों के कारण उत्पन्न स्थितियों ये अर्न्तविरोध और अधिक खुलरक सामने आये क्योंकि ऐसे समय में भारत पर आर्थिक एवं राजनीतिक नियंत्रण की आवश्यकता और भी कसकर महसूस की गयी। इसने ब्रिटेन द्वारा भारत में उत्पन्न अतिरिक्त पैदावार के शोषण के प्रक्रिया को और अधिक तेज कर दिया। ऐतिहासिक प्रक्रिया में इस अतिरिक्त पैदावार से स्वयं भारत में पूँजीवादी विकास मार्ग प्रशस्त करने के लिए आदम संचय की तैयारी में योगदान दिया होता। किन्तु अंग्रेजों द्वारा भारत में अपनायी गयी नीतियों एवं उनके आर्थिक प्रभाव के परिणामस्वरूप यह प्रक्रिया अवरूद्ध हो गयी। इसके कारण उत्पन्न गहरे आर्थिक संकट ने ही भारत में उठने वाले उस राजनैतिक उभार की आधारशीला रखी जिसने साम्राज्य विरोधी संघर्षों का इतिहास रचा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सुमित सरकार : आधुनिक भारत (1885–1947), 1942, पृ. 54।
2. बेरा एम्टे : दी इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑफ इण्डिया, पृ. 470–78।
3. ए. आर. देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृ. 41।
4. लियोनॉर्ड मोसले : भारत में ब्रिटिश राज के दिन।
5. मौलाना अबुल कलाम आजाद : आजादी की काहनी।
6. मन्मथ नाथ गुप्त : राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास।
7. कामता चौबे : भारतीय स्वाधीनता संग्राम और भारतीय मुसलमान।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)